शोध-चिंतन पत्रिका: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
अंक:3; जुलाई-दिसंबर, 2021; पृष्ठ संख्या: 49-67

छायावादी काव्य में नारी का स्थान

✍ डॉ॰ रीतामणि वैश्य

शोध-सार:

छायावाद आधुनिक हिन्दी कविता की उस धारा का नाम है, जो 1918 के आसपास द्विवेदी-युगीन निरस, उपदेशात्मक, इतिवृत्तात्मक और स्थूल आदर्शवादी काव्यधारा के बीच से प्रमुखतः रीतिकालीन काव्य-प्रवृत्ति के विरुद्ध विद्रोह के रूप में प्रवाहित हुई थी। छायावाद कुछ नवीन प्रवृत्तियों के साथ हिन्दी के काव्य जगत में अवतरित होता है। आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति, शृंगारिकता, नारी का चित्रण, सौन्दर्य भावना, रहस्य भावना, वेदना और करुणा की अभिव्यक्ति, मानवातावादी दृष्टिकोण, प्रकृति पर चेतना का आरोप, देशप्रेम की भावना, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता एवं चित्रात्मकता, गीति शैली आदि छायावाद की मूल प्रवृत्तियाँ रही हैं। कुछ विद्वान छायावाद को पाश्चात्य रोमांटिसिजम के प्रभाव से विकसित एक काव्यधारा मानते हैं। तो कई इस धारा पर रवीन्द्रनाथ की 'गीतांजलि' का प्रभाव मानते हैं। सामान्य मत है कि यह रीतिकालीन उन्मुक्त प्रेम धारा का विकसित रूप है। जो भी हो, रोमांटिसिजम, 'गीतांजलि' और रीतिमुक्त काव्याधरा-इन सब काव्यधाराओं में नारी का चित्रण मिलता है। पर यह चित्रण बाहरी है,आंतरिक नहीं। इन काव्यों में नारी के अन्तःकरण को टटोलने का प्रयास नहीं हुआ। छायावाद में भी नारी का वर्णन हुआ है,नारी के विविध रूपों का यहाँ चित्रण मिलता है। पर छायावाद में जिस आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति की बात की जाती है,वहाँ नारी मन की अनुभूति की उपेक्षा हुई है। मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' या 'यशोधरा' में कवि जिस तरह उन चरित्रों के अन्तर्मन में पैठ गए थे,छायावादी काव्यधारा में उस चेतना का अभाव मिलता है।

बीज शब्द : *छायावादी काव्य, रोमांटिसिजम, 'गीतांजलि', रीतिमुक्त काव्यधारा, नारी ।*

प्रस्तावना:

छायावाद(1918-1936) आधुनिक हिन्दी कविता की उस धारा का नाम है,जो 1918 के आसपास द्विवेदी-युगीन(1900-1918) निरस,उपदेशात्मक, इतिवृत्तात्मक और स्थूल आदर्शवादी काव्यधारा के बीच से प्रमुखतः रीतिकालीन काव्य-प्रवृत्ति के विरुद्ध विद्रोह के रूप में प्रवाहित हुई थी। छायावाद कुछ नवीन प्रवृत्तियों के साथ हिन्दी के काव्य जगत में अवतरित होता है। आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति, शृंगारिकता, नारी का चित्रण,सौन्दर्य भावना,रहस्य भावना,वेदना और करुणा की अभिव्यक्ति, मानवातावादी दृष्टिकोण, प्रकृति पर चेतना का आरोप, देश-प्रेम की भावना, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता एवं चित्रात्मकता, गीति शैली आदि छायावाद की मूल प्रवृत्तियाँ रही हैं। कुछ विद्वान छायावाद को पाश्चात्य रोमांटिसिजम(1800-1850) के प्रभाव से विकसित एक काव्यधारा मानते हैं। तो कई इस धारा पर रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1861-1941) की 'गीतांजलि' (1912) का प्रभाव मानते हैं। सामान्य मत है कि यह रीतिकालीन(1700-1850) उन्मुक्त प्रेम धारा का विकसित रूप है। छायावाद की विविध प्रवृत्तियों में नवीन रूप में नारी की प्रतिष्ठा एक प्रमुख प्रवृत्ति है।

छायावाद आधुनिक काल की एक अन्यतम उपलब्धि है,जो नवीन काव्य-कौशल के साथ साहित्य क्षेत्र में अवतरित होता है। इस कालावधि में नवीन कला और नवीन दृष्टि के साथ सैकड़ों कविताएँ लिखी गयीं। इन रचनाओं को पुरस्कार भी मिला है और इन्हें तिरष्कृत भी होना पड़ा। अनुभूति एवं अभिव्यक्ति- दोनों क्षेत्रों में छायावादी कविता उत्कृष्ट कोटि की कविता है। यहाँ सुक्षातिसूक्ष्म अनुभूतियों की प्रतिष्ठा का प्रयास किया गया है। पुरुषतांत्रिक समाज व्यवस्था के बीच जन्मा और पला हुआ साहित्य पुरुषों पर ही केन्द्रित होता है। आधुनिक काल के पूर्ववर्ती समय तक नारी कविता में उपेक्षित रही। छायावाद में सूक्ष्म अनुभूतियों पर महत्व प्रदान किया गया है। पर नारी के अन्तर्मन की सूक्ष्म अनुभूतियों पर उतना ध्यान नहीं दिया गया, जितना दिया जाना चाहिए था। छायावादी काव्य में नारी को किस दृष्टि से चित्रित किया गया है, उसका अध्ययन आवश्यक है। अतः शोध के लिए प्रस्तुत विषय महत्वपूर्ण है।

विश्लेषण:

छायावाद विशिष्ट कविताओं से समृद्ध एक कालावधि है। जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी'(1935), 'आँसू'(1925), 'झरना' (1918), 'कानन-कुसुम'(1913), 'प्रेम पथिक' (1913), 'लहर'(1933), सुमित्रानंदन पंत(1900-1977) के 'वीणा'(1918), 'ग्रंथि' (1920), 'पल्लव'(1926), 'गुंजन'(1932), 'ग्राम्या'(1940), 'युगांत'(1936), महादेवी वर्मा के 'नीहार'(1930), 'रश्मि'(1932), 'नीरजा'(1934), 'सांध्यगीत'(1935), 'दीपशिखा'(1942), 'प्रथम आयाम'(1984); सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के 'परिमल' (1929), 'कुकुरमुत्ता'(1942), 'अर्चना' (1950), 'सांध्य काकली'(1954), 'गीतिका' (1936), 'आराधना'(1953), 'गीत गुंज' (1954), 'अणिमा'(1943), आदि इस युग की प्रमुख उपलब्धियां हैं। एक लंबी परंपरा से गुजरकर हिन्दी कविता इस तरह की उच्च स्तर की कविता तक पहुंची है।

छायावादी काव्य की पृष्ठभूमि

छायावादी काव्य की एक गरिमामय पृष्ठभूमि है। रीतिकाल की रीतिमुक्त धारा के काव्य में जो स्वच्छंदता की भावना मिलती है,वही वस्तुतः छायावादी काव्य का बीज रहा है। छायावाद पर अंग्रेजी रोमांटिसिजम की कविताओं का भी प्रभाव पड़ा। रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीतांजलि' ने भी छायावादी कविता को प्रेरित किया। भारतेन्दु और द्विवेदीयुग के काव्य काव्य में भी छायावादी स्वच्छंदता की भावना क्रमशः प्रबल और निर्बल रूप में देखी जाती है।

रीतिकालीन रीतिमुक्त काव्याधारा में नारी का स्थान

छायावादी काव्याधरा का बीज रीतिकालीन स्वच्छंदतावादी काव्यधारा में मिलता है। कवि घनानन्द ने नायिका सुजान के अद्‌भुत रूप-सौन्दर्य का चित्रण किया है। सुजान का गोरा चेहरा चमक रहा है। उसकी आँखें कानों तक स्पर्श करती हैं। जब वह हँसती हुई बोलती है,तो उसके वक्षस्थल पर शोभा के फूल की वर्षा होती है। उसके कपोलों पर चंचल लटें क्रीड़ा कर रही है। उसके कंठ में मोती की शोभायमान है। उसके अंगों से शोभा की तरंगें उठती हैं।ऐसा प्रतीत होता है

कि मानो पृथ्वी पर अभी उसका रंग चू पड़ेगा-

झलकै अति सुंदर आनन गौर,छके दृग राजत काननि छवै ।

हँसि बोलनि में छबि-फूलन की बरषा,उर-ऊपर जाति है ह्वै।

लट लोल कपोल कलोल करै,कलकंठ बनी जलजावलि ह्वै।

अंग अंग तरंग उठै दुति की,परिहै मनो रूप अबै धर च्वै॥

(सिंह 2013:88)

घनानन्द की कविताओं से उनके और सुजान के बिछ शारीरिक संबंध की जानकारी भी मिलती है। कवि कहते हैं कि मिलन के समय बीच में आया हुआ हार भी पहाड़ के समान लगता था,किन्तु अब तो बीच में आकर पहाड़ ही पड़ गए हैं-

घनआनंद मीत सुजान बिना सब ही सुख साज समाज टरे।

तब हार पहार से लागत है अब आनि कै बीच पहार परे॥

(सिंह 2013:92)

इस धारा के प्रमुख कवि हैं घनानन्द। प्रेम पीर के कवि के रूप में ख्यात घनानन्द की कविताओं में विरह की गहन अनुभूतियाँ मिलती हैं। कवि को सुजान से प्रेम था। वही सुजान,जिसे इतिहास में केवल घनानन्द के आश्रयदाता राजा की गणिका के रूप में जाना जाता है। राजा को सुजान के प्रति घनानन्द के प्रेम का ज्ञात होते ही उन्हें देश से निकाल दिया गया। तद्पश्चात कवि ने विरह की अनेक भावगंभीर कविताएँ लिखीं। इन कविताओं में कवि के अपने हृदय की अनुभूतियाँ चित्रित होती हैं। कवि सुजान से कहते हैं कि प्रेम का मार्ग अति सीधा एवं सरल होता है। इस मार्ग में थोड़ी सी भी चतुरता या कुटिलता नहीं होती। मेरे हृदय में केवल तुम्हारे प्रति ही प्रेम है। तुम ने कौन-सी पट्टी पढ़ी है,जिससे तुमने मेरा पूरा मन ले लिया है। पर बदले में मुझे छंटाक भी नहीं दिया-

अति सूधो सानेह को मारग है जहँ नेकु सयानप बाँक नहीं।

तहाँ साँचे चलै तजि आपनपौ झझकै कपटी जे निसाँक नहीं।

घन आनंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं।

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो मन लेहु,पै देहु,छटाँक नहीं॥

(सिंह 2013:92)

घनानन्द की कविताओं के केंद्र में सुजान रही। उनके प्रेम में स्वच्छंदता है। आपने प्रेम की एक-एक अनुभूतियों को सूजन के प्रति समर्पित किया है। उन कविताओं में सुजान पर आरोप भी लगे,सुजान के प्रति कवि का गहन प्रेम का चित्रण भी हुआ,विरही कवि का हृदय समग्रता से यहाँ उकेरा गया। पर कवि ने सुजान के आत्म पक्ष की उपेक्षा की । यह निश्चित रूप से कहा नहीं जा सकता कि सुजान को घनानन्द से प्रेम नहीं था। कहा जाता है कि देश छोड़ते समय घनानन्द ने सुजान से अपने साथ चलने का आग्रह किया था,जिसे सुजान नकारती है। यही एक कारण से सुजान को सिर्फ गणिका की दृष्टि से देखा जाना उचित नहीं है।सच तो यह है कि न तो घनानन्द ने सुजान के साथ न्याय किया और न ही समीक्षक सुजान के साथ न्याय कर रहे हैं। सुजान का प्रयोजन राजा से था। फिर भी उसने घनानन्द से संबंध बनाया। हमारे विचार से यह संबंध सिर्फ शरीर का नहीं हो सकता । केवल शारीरिक तुष्टि के लिए वह राजा से विपत्ति शायद ही मोल लेती,जो राजा से सिद्ध हो ही रहा था। सुजान के हृदय में भी घनानन्द के प्रति प्रेम का भाव रहा होगा,तभी तो उसने राजा का डर जीतकर घनानन्द से संपर्क बनाए रखा। राजा के आग्रह की उपेक्षाकर सुजान के आग्रह की रक्षा करते हुए गाना गाने के अपराध में घनानन्द को देश निकाला दे दिया गया। अगर सुजान घनानन्द के साथ चल पड़ती,उसकी परिणति कितनी भयानक होती,राज दरबार में रहनेवाली सुजान को इसका ज्ञान जरूर रहा होगा । अगर सुजान के हृदय को टटोला गया होता,आज शायद सुजान की पहचान गणिका से परे होती।

रोमांटिसिजम में नारी का स्थान

छायावाद के संदर्भ में यह माना जाता है कि यह नयी काव्यधारा अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर की काव्यधारा के ढंग की या उससे प्रभावित थी । प्रकृति के चितेरे , कोमलकान्त पदावली के प्रतीक कविवर सुमित्रानंदन पंत ने छायावाद का सीधा संबंध पाश्चात्य साहित्य के रोमांटिसिजम से जोड़ा है। उनका मानना है कि छायावादी कविता रोमांटिसिजम से प्रभावित है।

रोमांटिसिजम अंग्रेजी साहित्य का एक कलात्मक, साहित्यिक, सांगीतिक और बौद्धिक आंदोलन है। यह 18 वीं सदी के

अंतिम समय में यूरोप में शुरू हुआ था। विलियम ब्लेक(1757-1827), एडगर अल्लन पोए (1809-1849), विलियम वोड्स्वर्थ(1770-1850), लॉर्ड बायरन(1788-1824), विक्टर हुगो (1802-1885), जॉन कीट्स(1795-1821), अलेक्जेंडर पुश्किन(1799-1837), रोबर्ट बर्न्स(1759-1796), पेर्सी बायस्शे शेली(1792-1822), सेमुयल टेलर कॉलरीज़(1772-1834) आदि रोमांटिसिजम के प्रमुख कवि हैं । इस धारा की कविताओं में व्यक्ति मन के आवेग एवं अनुभूतियों पर ज़ोर दिया गया है । प्रकृति को मनाना इसकी प्रमुख प्रवृत्ति रही। यहाँ नारी को सौन्दर्य और यौन के प्रतीक के रूप में ग्रहण किया गया है। नारी के सौन्दर्य के बाह्य पक्ष को उकेरना रोमांटिसिजम की कविताओं का एक लक्ष्य रहा है । इसी के चलते इन कविताओं में नारी के आत्मिक सौन्दर्य की उपेक्षा हुई।

विलियम वोड्स्वर्थ की 'सी वाज ए फेंटोम ऑफ दीलाइट'(She was a Phantom of Delight) शीर्षक कविता में प्रेमिका के रूप में नारी का चित्रण मिलता है। कविता में कवि ने अपनी पत्नी का और उसके प्रति अपनी प्रतक्रिया का वर्णन किया है। अपनी पत्नी के साथ के संबंध को कवि ने तीन बिन्दुओं से रेखांकित किया है-जब कवि पहली बार उससे मिले थे,फिर वे एक दूसरे को अच्छी तरह एक दूसरे को जानने लगे और अब वे विवाहित हैं। जब कवि पहली बार मैरी हुटचिनसन से मिले थे,तब वह आनंद की प्रेरणा थी। अपनी पत्नी के साथ कवि की घनिष्ठता थी। आपने पत्नी की स्त्रीसुलभ गुणों का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि वह मुक्त भाव से घर का काम करती है। उसके मुक्त विचरण से ऐसा प्रतीत होता है कि वह अब भी कुमारी है। कवि उनके चेहरे पर मीठे वादे देखते हैं। वह जीवन की दैनिक घटनाओं का सामना करने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं है। वह एक साधारण नारी है, जो कवि की प्रेरणा है। उसमें दुख, सुख, आरोप, प्रेम, चुंबन, आँसू और हंसी को संतुलित रखने का गुण है-

I was her upon a nearer view,
A Sprit,yet a Woman too!
Her household motions light and free,
And steps of virgin liberty;
A countenance in which did meet
Sweet records, promises as sweet;

A creature not too bright or good
For human nature's daily food;
For transient sorrows, simple wiles,
Praise,blame,love,kisses,tears and smiles.

(users.telenet.be>gaston.d.haese>words.28.10.2018)

अंग्रेजी साहित्य के जानेमाने कवि रोबर्ट ब्राउनिंग की कविताओं में भी रोमांटिसिजम के कुछ तत्व मिलते हैं। उनकी ' द लस्त राइड तुगेदर'(=The Last Ride Together,1855) शीर्षक कविता में नारी के बाहरी रूप का चित्रण मिलता है।प्रस्तुत कविता वस्तुतः एक नाटकीय आत्मभाषण(=Dramatic Monologue) है,जहां प्रत्याखित प्रेमी कवि अपनी पत्नी एलिजावेथ बरेत ब्राउनिंग के साथ अंतिम सैर करना चाहते हैं। एक ऐसा सैर जो कभी खत्म न हो। कविता का मूल स्वर प्रेम और खोना है (love and lose) है। प्रेमी पत्नी के साथ गुजरे हुए पलों के स्मरण से आनंदित होते हैं । वे पत्नी से एक अंतिम सैर के लिए आग्रह करते हैं । पत्नी के उत्तर को वह जीवन और मृत्यु से तुलना करते हैं । अगर उसने हाँ कर दिया तो उसे मानो नवजीवन मिल जाएगा और अगर ना कर दिया तो वह उनकी मौत से कम नहीं होगा। कविता का भाव दुख और ऊब से भरा है। वह अपनी पत्नी को जहाँ रहे,खुश देखना चाहते हैं । वह कवि के आग्रह को स्वीकार करती है। कवि के अनुसार जीवन में अगर प्रेम नहीं है,तो दुनिया में कुछ नहीं रह जाता है। पत्नी द्वारा उसके प्रत्याख्यान को वे भाग्य का खेल समझते हैं । कवि प्रेयसी के प्रति यौन आकर्षण का अनुभव करते हैं-

Hush! if you saw some western cloud
All billowy-bosomed,over-bowed
By many benedictions-sun's
And moon's and evening star's at once-
And so,you,looking and loving best,
Conscious grew,your passion drew
Cloud,sunset,moonrise,star-shine too,
Down on you, near and yet more near,
Till flesh must fade for heaven was here!-
Thus leant she and lingered-joy and fere!
Thus lay she a moment on my breast

.(http://owlcation.com-28.10.2018)

इसतरह रोमांटिसिजम और रोमांटिक कविताओं से पुष्ट कविताओं में नारी चित्रित हुई है। पुरुष ने नारी को जिस रूप से पाया

है,उसी रूप में उसका वर्णन किया है। रोमांटिसिजम में भी नारी के अन्तर्मन की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति नहीं हुई है।

'गीतांजलि' में नारी नारी का स्थान

पहले ही कहा जा चुका है कि छायावादी कविता रवीन्द्रनाथ की 'गीतांजली' से प्रभावित मानी जाती है। कहा जाता है कि कविता की यह धारा बंगाल के कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की काव्यधारा के ढंग की या उससे प्रभावित थी । रवीन्द्रनाथ की 'गीतांजलि' में प्रकृति चित्रण, प्रेम की भावना, मानवतावाद, सौन्दर्य चेतना, रहस्य भावना आदि रोमांटिसिजम की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट रूप से मिलती हैं । कवि ने काव्य में बार-बार प्रेम का प्रसंग उठाया है। पर वह प्रेम ईश्वर से है। कवि सबके साथ रहना चाहते हैं। वे अकेले ईश्वर की प्राप्ति नहीं चाहते। कवि ईश्वर से कहते हैं कि तुम जहाँ सबसे मिलते हो,वहाँ मैं भी तुमसे मिलना चाहता हूँ-

सबार पाने येथाय बाहु पसारॉ
सेइखानेतेइ प्रेम जागिबे आमारो।
गोपने प्रेम रय ना घरे,
आलोर मतो छड़िए पड़े-
सबार तुमि आनंदधन, हे प्रिय,
आनंद सेइ आमारो।

(ठाकुर 2002:94)

कवि ईश्वर को चाहते हैं। उनका कहना है कि यही बात मन में रहे कि मैं तुम्हें ही चाहता हूँ। हम दैनंदिन जीवन में तुच्छ विषयों में जुड़ जाते हैं। पर ये सब व्यर्थ है-

चाइ गो आमि तोमारे चाइ
तोमाइ आमि चाइ-
एइ कथाटि सदाय मने
बलते येन पाइ।
आर या-किछु बासनाते
घुरे बेड़ाइ दिने राते
मिथ्या से-सब मिथ्या,ओगो,
तोमाइ आमि चाइ।

(ठाकुर 2002:88)

'गीतांजलि' में इस तरह के भाव संवलित कई पंक्तियाँ मिल जाती हैं । इन पंक्तियों में उनके प्रेम एवं वेदना का मार्मिक चित्रण हुआ है। उनका प्रेम ईश्वर से है। अतः इस स्थिति में नारी का चित्रण या उसके अन्तर्मन को झाँकने का काम यहाँ भी उपलब्ध नहीं हो सका।

भारतेन्दु और द्विवेदी युग की कविता में नारी का स्थान

भारतेन्दु युग(1850-1900) में यथार्थवादी भावभूमि,राष्ट्रीय भावना के

साथ-साथ स्वच्छंदतावादी मनोवृत्ति का स्वरूप निर्धारित हो चुका था।जगमोहन सिंह(1857-1899) की 'प्रेमसंपत्तिलता' की इन पंक्तियों में स्वच्छंदतवादी मनोवृत्ति का स्वरूप स्पष्ट होता है। इन पंक्तियों में कवि ने प्रेयसी के रूप में नारी का चित्रण किया गया है-

अब यों उर आवत है सजनी,
मिलि जाऊँ गरे लगि कै छतियाँ।
मन की करि भाँति अनेकन औ
मिलि कीजिये री रस की बतियाँ।
हम हारि करि कोटि उपाय,
लिखी बहु नेह भरी पातियाँ।
जगमोहन मोहिनी मूरति के बिना
कैसे कटें दुख की रतियाँ॥

(हरदयाल 2012:444)

भारतेंदु युग में अंकुरित सांस्कृतिक चेतना द्विवेदी युग में पूर्ण पुष्पित होती है। श्रीधर पाठक(1860-1928), मैथिलीशरण गुप्त(1886-1964) और आयोद्धासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'(1865-1947) के काव्यों में रीतिकालीन स्वच्छंद धारा की प्रवृत्ति मिलती है। द्विवेदी युग में यथार्थवादी भावभूमि और राष्ट्रीय भावना का विकास तो हुआ, पर स्वच्छंदतवादी मनोवृत्ति का मार्ग यहाँ अवरुद्ध-सा हो गया। छायावादी युग में स्वच्छंदतावादी मनोवृत्ति प्रधान हो गई और यथार्थवादी भावभूमि एवं राष्ट्रीय भावना ने छायावादी काव्य को पुष्ट किया। इसतरह छायावादी कविता कहीं बीच से टपकी हुई वस्तु नहीं है,एक सुनिश्चित आधार पर उसका विकास हुआ है।

छायावादी काव्य में नारी का स्थान

हिन्दी काव्य-जगत में छायावादी कविता उत्कृष्ट कोटि की कविता मानी गई। साहित्य में पहली बार के लिए मनुष्य के अन्तर्मन को टटोला गया। इन कविताओं में नारी का चित्रण हुआ है। छायावादी कविता में नारी विषयक नवीन दृष्टिकोण अपनाया गया है। इस युग में नवीन सांस्कृतिक चेतना की जागृति के कारण नारी संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव आया। नारी पुरुषों की प्रेरणा शक्ति बन गई।

नगेंद्र छायावाद की परिवृत्ति के बारे में कहते हैं-

जब-जब स्थूल की प्रभुता असह्य होती गई है, तभी सूक्ष्म ने उसके विरुद्ध क्रांति की है। इस क्रांति और इस विद्रोह के प्रोद्भास रूप से जो गान संसार की आत्मा ने उन्मत्त होकर गाये, वही छायावाद की कविता के प्राण हैं। सारांश

यह है कि स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह ही छायावाद का आधार है। स्थूल शब्द बड़ा व्यापक है,इसकी परिधि में सभी प्रकार के वाह्य रूप-रंग-रूढ़ि आदि सन्निहित हैं। और इसके प्रति विद्रोह का अर्थ है उपयोगितावाद के प्रति भावुकता का विद्रोह, नैतिक रूढ़ियों के प्रति मानसिक स्वातंत्र्य का विद्रोह और काव्य के बंधनों के प्रति स्वच्छंद कल्पना और टेकनीक का विद्रोह। (नगेंद्र1998:1)

नगेंद्र ने इस परिभाषा में छायावाद को सूक्ष्म का विद्रोह माना है।

कवयित्री महादेवी वर्मा छायावाद के नामकरण की उपयुक्तता पर विचार करती हुई कहती है कि छायावाद मनुष्य हृदय की आंतरिक अभिव्यक्ति है-

सृष्टि के बाह्याकार पर इतना लिखा जा चुका था कि मनुष्य का हृदय अभिव्यक्ति के लिए रो उठा। स्वच्छंद छंद में चित्रित उन मानव अनुभूतियों का नाम छाया उपयुक्त ही था और मुझे तो आज भी उपयुक्त ही लगता है। (शर्मा:490)

छायावाद की इन परिभाषाओं से एक एक बात स्पष्ट है कि छायावाद मनुष्य हृदय सुक्षातिसूक्ष्म अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का मंच है। सवाल यह है कि इस मनुष्य हृदय में नारी को भी सम्मिलित किया गया है या नहीं। प्रस्तुत अध्ययन में छायावाद के प्रमुख रचनाकारों की रचनाओं में नारी

डॉ. गोपाल राय का कहना है-

नारी के शारीरिक सौन्दर्य के अनेक मोहक चित्र प्रणय की कविताओं में बिखरे हुए मिलते हैं। यह सौंदर्य प्रत्यक्ष रूप से नायिका के रूप-वर्णन में भी दिखाई देता है,जैसे प्रसाद-कृत 'आंसू' तथा 'कामायनी' में प्रस्तुत किया गया नायिका का सौन्दर्य या पंत-कृत 'भावी पत्नी के प्रति' में व्यक्त नायिका का सौंदर्य और परोक्ष तथा सांकेतिक रूप में भी लक्षित होता है निराला की 'जूही की कली' में। (नगेंद्र 2012:529)

छायावादी कविता का शृंगार और सौन्दर्य नारी से संबन्धित है। छायावादी कवियों ने प्रकृति को नारी के रूप में चित्रित किया है। डॉ॰ किश्वर सुल्ताना छायावाद में नारी के संबंध में कहते हैं-

उसे(नारी को) सौन्दर्य और शक्ति की देवी मानकर युगों से आच्छादित संकीर्ण पदों को उखाड़ फेंका। रीतिकालीन " लहलहाती तन तरुनई" और द्विवेदीकालीन "देवी" को छोड़ अब

> कवियों ने नारी को नवीन दृष्टिकोण से देखा। वह इस पार्थिव जगत की स्थूल नारी न रहकर अब भाव-जगत का सुकुमार "सौन्दर्य" हो गयी।...कवि ने कुत्सित लिंगभेद को समाप्त कर उसे "देवी! माँ! सहचरी! प्राण" रूप में उपस्थित किया।...इस प्रकार छायावाद ने ही नारी-भावना का चरमोत्थान किया और उसे इतना ऊंचा और गौरव-सम्पन्न स्थान दिया ।(सुल्ताना 1985:86)

छायावाद की इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि छायावाद मनुष्य हृदय की सुक्षातिसूक्ष्म अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का मंच है। छायावाद में नारी के विविध रूपों में चित्रित हुआ है। सवाल यह है कि इस 'मनुष्य' के अंतर्गत नारी को रखा गया है या नहीं। प्रस्तुत अध्ययन में छायावाद के प्रमुख रचनाकारों की रचनाओं में नारी को किस हद तक चित्रित किया गया है,उस पर समीक्षा की गयी है।

प्रसाद की कविताओं में नारी स्थान

निस्संदेह छायावादी कविताओं में नारी के सौन्दर्य का चित्रण मिलता है। इन कविताओं में वस्तुतः नारी के प्रति स्थित प्राचीन भोगवादी दृष्टि ही मिलती है। नारी अपूर्व सुंदरता की अधिकारिणी है। इसीलिए उसके अंगों-उपांगों का सुंदरतम वर्णन किया गया। प्रकृति के मानवीकरण के रूप में नारी का व्यापक प्रयोग हुआ। 'कामायनी' में भी प्रकृति के अद्भुत सौन्दर्य का वर्णन मिलता है। यहाँ प्रकृति की सुंदरता के प्रतिमान के रूप में नारी का प्रयोग हुआ,पर नारी की प्रतिष्ठा का सवाल यहाँ सवाल बनाकर ही खड़ा रहा। छायावादी काव्य में नारी की प्रतिष्ठा की मांग का एक प्रमुख आधार है 'कामायानी' है। इस महाकाव्य में प्रसाद ने नारी को श्रद्धा का पर्याय माना है। आपने नारी को आदर्श के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठा की है-

> नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पगतल में;
> पीयूस-स्रोत-सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में।

(प्रसाद 2001:46)

इन पंक्तियों में मर्यादा के नाम पर नारी के पैर जकड़े गए हैं। नायिका श्रद्धा को गर्भावस्था में छोडकर छोकर जानेवाले साथी मनु को मन का प्रतीक मानकर पुरुष को किसी भी तरह के चंचल हरकत करने की मानो इजाजत दे दी गयी हो।

प्रसाद को असमय पत्नी वियोग सहना पड़ा था। उनकी कविताओं में विरह का

अपना पक्ष मिलता है। उनके नाटकों के पात्रों में नारी को विविध रूपों में प्रतिष्ठा दी गयी है। पर जिस सूक्ष्म अनुभूतियों की बात छायावादी कविताओं को लेकर की जाती है,वहाँ नारी मन उपेक्षित रहा।

निराला की कविताओं में नारी का स्थान

निराला ने काव्य में नारी को विविध रूपों में उतारा है। आपकी 'संध्या सुंदरी' कविता में कवि ने मानवीकरण आलंकार के सहारे संध्या की सुंदरता का वर्णन किया है-

दिवसावसान का समय,
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या-सुंदरी पारी-सी
धीरे धीरे धीरे।
तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं
आभास,
मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर-
किन्तु,जरा गंभीर,-नहीं है उसमें हास-
विलास।
हँसता है केवल तारा एक
गूँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों
से,
हृदयराज्य की रानी का वह करता है
अभिषेक।

(सिंह 2013:63)

निराला की विधवा कविता में कवि ने नारी के वैधव्य जीवन का कारुणिक एवं सहानुभूतिपूर्ण वर्णन किया है-

वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा-सी
वह दीप-शिखा-सी शांत,भाव से लीन
वह क्रूर-काल-तांडव की स्मृति-रेखा-सी,
वह टूटे तरु की छूती-लता-सी दीन
दलित भारत का ही विधवा है।

(सिंह 2013:66)

निराला की 'राम की शक्ति पूजा' कविता में कवि ने एक नारी (सीता) को केंद्र में रखकर कथा को आगे बढ़ाया है। कविता में सीता राम की प्रेरणा शक्ति है,दुर्गा शक्ति की अधिष्ठात्री देवी है। पर कथा का लक्ष्य पुरुष (राम) की शक्ति आहरण की प्रक्रिया को समाप्त करती है। राम के मन में सीता के प्रथम दर्शन का दृश्य छा जाता है। पर अपहृता सीता मन के विरह,प्रेम,विद्रोह,अहं अभिमान आदि संभावित प्रसंगों की उपेक्षा हुई है-

ऐसे क्षण अंधकार घन में जैसे विद्युत्
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि
अच्युत
देखते हुए निष्पलक,याद आया उपवन
विदेह का,-प्रथम स्नेह का लतान्तराल
मिलन

नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय
संभाषण-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-
पाटन,-
कांपते हुए किसलय-झरते पराग
समुदाय,-
गाते खग नव-जीवन-परिचय-तरु मलय-
वलय,
ज्योति:-प्रपात स्वर्गीय,-ज्यात छवि प्रथम
स्वीय,-
जानकी नयन कमनीय प्रथम कंपन
तुरीय।

(सिंह 2013:70)

निराला ने 'सरोज स्मृति' कविता में पुत्री सरोज को स्नेह पुष्प अर्पित करते हैं। वे पिता के रूप में अपनी असहाय दशा का कारुणिक चित्रा खींचते हैं-

धन्ये,मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका!
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित-काय
लाखकर अनर्थ आर्थिक पाठ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ-समर।

(सिंह 2013: 78)

निराला ने 'तोड़ती पत्थर' कविता में रास्ते में पत्थर तोड़ती एक औरत का कारुणिक वर्णन किया है-

वह तोड़ती पत्थर;
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर-
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार:-
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

(http://www.hindi-kavita.com/HindiPoetrySuryakant Tripathi Nirala.php#Nirala.21.7.2017)

इस कविता में आगे कवि ने औरत के मन को भापने का एक प्रयास किया है। औरत कुछ सोचती है, फिर काम में लग जाती है-

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,

सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।

एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,

ढुलक माथे से गिरे सीकर,

लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-

"मैं तोड़ती पत्थर।"

(http://www.hindi-kavita.com/HindiPoetrySuryakant Tripathi Nirala.php#Nirala.21.7.2017

पंत की कविताओं में नारी चित्रण

कविवर सुमित्रानंदन पंत की कई कविताओं में नारी का वर्णन मिलता है। 'ग्राम्या' में संकलित उनकी 'स्त्री' कविता में मित्रानंदन पंत ने नारी में स्वर्ग और नरक का वास माना है-

यदि स्वर्ग कहीं है पृथ्वी पर, तो वह

नारी उर के भीतर,

दल पर दल खोल हृदय के अस्तर

जब बिठलाती प्रसन्न होकर

वह अमर प्रणय के शतदल पर!

.....

यदि कहीं नरक है इस भू पर, तो वह भी

नारी के अन्दर,

वासनावर्त में डाल प्रखर

वह अंध गर्त में चिर दुस्तर

नर को ढकेल सकती सत्वर!

(Kavitakosh.org/kk/ -/- sumitranandan Pant.27.7.2017)

'ग्राम्या' की 'मज़दूरनी के प्रति' कविता भी नारी पर केन्द्रित है। यहाँ कवि ने नारी को मानवी के रूप में प्रतिष्ठा की है-

कुल वधू सुलभ संरक्षणता से हो वंचित,

निज बंधन खो, तुमने स्वतंत्रता की

अर्जित।

स्त्री नहीं, बन गई आज मानवी तुम

निश्चित,

जिसके प्रिय अंगो को छू अनिलातप

पुलकित!

(Kavitakosh.org/kk/ -/- Sumitranandan Pant.27.7.2017)

पंत की 'नारी' कविता में कवि के मन में नारी के प्रति सहानुभूति मिलती है। नारी की प्रतिष्ठा का प्रयास यहाँ मिलता है। कवि नारी को नर की लालस प्रतिमा कहते हैं। वह युगों से वंदिनी है। वह पशु सी जीवित है। उसे सदाचार की सीमा में जकड़ा गया है। अंत में कवि नारी को पुरुष के साथ स्थापित कर उसे मानव का दर्जा देने में विश्वास रखते हैं-

योनि नहीं है रे नारी, वह भी मानवी

प्रतिष्ठित,

उसे पूर्ण स्वाधीन करो, वह रहे न नर पर

अवसित।

द्वन्द्व क्षुधित मानव समाज पशु जग से भी

है गर्हित,

नर नारी के सहज स्नेह से सूक्ष्म वृत्ति हों

विकसित।

(Kavitakosh.org/kk/ -/- Sumitranandan Pant.27.7.2017)

पंत ने नारी से संबन्धित कई कविताएं लिखीं,विविध रूपों में नारी को चित्रित किया। उनकी 'पर्वत-प्रदेश में पावस' कविता में बाल्यकाल की मित्र का वर्णन करते हैं-

धँस गये धरा में समय शाल!

उठ रहा धुआँ,जल गया ताल!

-यों जलद यान में विचर-विचर

था इंद्रा खेलता इंद्रजाल!

(वह सरला उस गिरि को कहती थी बादल-घर)

इस तरह मेरे चितेरे हृदय की

बाह्य प्रकृति बनी चमत्कृत चित्र थी;

सरल शैशव की सुखद सुधि-सी वही

बालिका मेरी मनोरम मित्र थी।

(सिंह2013:91)

महादेवी की कविताओं में नारी का स्थान

छायावाद की कवयित्री महादेवी वर्मा की कविताओं में नारी हृदय की वेदना का प्रस्फुटन मिलता है। 'क्या नई मेरी कहानी' में वे अपनी करुण कहानी कहती हैं-

क्या नई मेरी कहानी !

विश्व का कण-कण सुनाता

प्रिय वही गाथा पुरानी !

सजल बादल का हृदय-कण,

चू पड़ा जब पिघल भू पर,

पी गया उसको अपरिचित

तृषित दरका पंक का उर;

मिट गई उससे तड़ित सी

हाय! वारिद की निशानी !

करुण यह मेरी कहानी !

(http://www.hindi-kavita.com/HindiPoetryMahadeviVerma.php#Mahadevi6.21.7.2017)

वे 'मैं नीर भारी दुख की बदली' कविता में स्वयं को बदली से तुलना करती हैं-

विस्तृत नभ का कोई कोना,

मेरा न कभी अपना होना,

परिचय इतना इतिहास यही,

उमड़ी कल थी मिट आज चली।

(http://www.hindi-kavita.com/HindiPoetryMahadeviVerma.php#Mahadevi6-----21.7.2017)

महादेवी को पारिवारिक जीवन का सुख नहीं मिला। आपका विवाह तो हुआ था,पर वह ज्यादा दिनों तक नहीं चला। इससी से उनकी कविताओं में विरह की गहराई मिलती है। वे अज्ञात प्रियतम की खोज में बेचैन दिखाई पड़ती है।

हमारे विचार से महादेवी के अज्ञात प्रियतम का संधान का विषय सच्चाई के कठघरे में खड़ी नहीं उतर सकता । दूसरी बात यह है कि वे अपनी कविताओं से नारी मन की अनुभूतियों को मुक्त कर सकती थीं,जो उन्होंने नहीं कीं। इसका कारण तदयुगीन समाज हो सकता है। आज की स्थिति में कोई परित्यक्ता नारी अपनी विरह वेदना की तीव्रता को खुले आम कह भी सकती है। पर जिस जमाने में महादेवी ने कविता लिखी,उस समय वैयक्तिक बातों को सामूहिक कर पाना मुश्किल था। कारण चाहे जो भी हो,महादेवी के अज्ञात प्रियतम के संधान के पीछे उनकी वैयक्तिक आकांक्षा ही थी,उसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। आलंबन प्रेम की अनिवार्य शर्त है। उसके अभाव में प्रेम ,फिर विरह की अनुभूति कैसे संभव हो सकता है। यह बात पंत पर भी लागू होती है। मौन निमंत्रण में कवि किसी से मौन निमंत्रण का अनुभव करता है-

स्तब्ध ज्योत्स्ना में जब संसार

चकित रहता शिशु-सा नादान,

विश्व के पलकों पर सुकुमार

विचरते हैं जन स्वप्न अजान;

न जाने,नक्षत्रों से कौन

निमंत्रण देता मुझको मौन!

(सिंह 2013 :92)

मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में नारी स्थान

छायावादी काव्यधारा की उपेक्षा मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में नारी की प्रतिष्ठा मिलती है। गुप्त की कविताओं में नारी नारी होने के साथ-साथ मनुष्य है। साकेत(1931) के नवां सर्ग में विरह विदग्धा उर्मिला अपनी कारुणिक दशा का बयान करती है-

विरह में आ जा तू ही मान!

स्वजनि,रोता है मेरा गान।

यही आज है इस मन में,

छोड़ धाम-धन जा कर मैं भी रहूँ उसी वन में।

(गुप्त1988:168)

फिर-

बीच बीच में उन्हें देख लूँ मैं झुरमुट की ओट,

जब वे निकाल जाएँ तब लेटूँ उसी धूल में लोट।

(गुप्त1988:168)

उसी तरह 'यशोधरा' (1932) में यशोधरा अपने पति के बिन कहे घर छोड़ जाने की बात पर सवाल खड़ा करती है-

मुझको बहुत उन्होंने माना,

फिर भी क्या पूरा पहचाना?

मैंने मुख्य उसी को जाना,

जो वे मन में लाते।

सखी,वे मुझसे कहकर जाते।

(गुप्त 1979:35)

गुप्त की कविताओं में नारी मन की विविध दशाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है।

निष्कर्ष:

द्विवेदी युग में भारतेन्दु युग के सांस्कृतिक जागरण का प्रमुख स्वर सुधारवादी हो गया। हिन्दी काव्य-संसार में समाज की तरह ही नारी की उपेक्षा की गई। रीतिकालीन रीतिमुक्त काव्यधारा में नारी का स्वच्छंद रूप से चित्रण हुआ है। इससे पहले आदिकाल विविध धार्मिक मान्यताओं एवं राजनीतिक प्रशस्तियों के नारी उपेक्षित हो गई। भक्तिकाल की भक्ति की प्रबल-धारा के सामने नारी टिक नहीं पायी थी। रीतिकालीन रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य में नारी का चित्रण तो बखूबी हुआ, पर वह भी पुरुषों की मानसिक तृप्ति के उद्देश्य से। इसीलिए वहाँ भी नारी भोग और सौन्दर्य का साधन बन कर रह गई। घनानन्द ने पहली बार साहित्य में नारी का स्वार्थरहित चित्रण किया। विरही होते हुए भी प्रेमिका सुजान की गंभीर अभिव्यक्ति दी। परवर्ती समय में हिन्दी के भारतेन्दु युग में नारी फिर से काव्य के पन्ने से उठ-सी गई। द्वेवेदी युग में मैथिलीशरण गुप्त ने साकेत और यशोधरा के माध्यम से नारी की सही प्रतिष्ठा की। छायावाद में नारी का बहुल वर्णन हुआ। पर वहाँ भी साधन के रूप में नारी का उपयोग किया गया, नारी को भारतीय परंपरा की दुहाई देकर फिर से जिम्मेदारियों की जंजीरों से जकड़ा गया। कुल

मिलकर कहा जा सकता है कि छायावाद पर पाश्चत्य रोमांटिसिजम का आंशिक प्रभाव रहा। रवीद्रनाथ की 'गीतांजलि' से छायावादी कविता को प्रोत्साहन मिला है। छायावाद का मूल बीज रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा में मिलता है। छायावादी काव्य में वैयक्तिकता की अभिव्यक्ति हुई। अपने निजी जीवन के प्रसंगों से कवि अनेक क्षेत्रों में बचते नजर आये। छायावादी काव्य में नारी का चित्रण मिलता है। नारी यहाँ संगिनी,सहचरी, प्रेमिका आदि के रूप में चित्रित की गयी। छायावादी काव्य में नारी के बाह्य सौन्दर्य की प्रतिष्ठा हुई है। नारी के अन्तर्मन को तलाशने का कोई ठोस प्रयास यहाँ नहीं मिलता। महादेवी की कविताओं में नारी मन की आंशिक अनुभूतियाँ मिलती हैं। उन्होंने जो अज्ञात प्रियतम का संधान किया है, वह विश्वसनीय नहीं हो सकता। द्विवेदी युग में जिस तरह उर्मिला,यशोधरा आदि चरित्रों के जरिए नारी मन को उकेरने का प्रयास हुआ,वह छायावाद में नहीं मिलता।

ग्रंथ-सूची :

अमरनाथ. हिन्दी आलोचना का पारिभाषिक शब्दावली. प्रथम. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2009.

गुप्त,मैथिलीशरण.यशोधरा.झाँसी:साकेत प्रकाशन,1979.

--.साकेत.झाँसी:साहित्य-सदन,1988.

ठाकुर,रवीन्द्रनाथ.गीतांजलि.सर्वाधुनिक संस्कारण.कोलकाता:पुनश्च, 2002.

तिवारी,अशोक और गंगासहाय 'प्रेमी'.हिन्दी साहित्य का इतिहास. आगरा:हरीश विश्वविद्यालय प्रकाशन.

नगेंद्र.सुमित्रानंदन पंत.प्रथम.नई दिल्ली:नेशनल पब्लिशिंग हाउस,1998.

--.हिन्दी साहित्य का इतिहास.दिल्ली:मयूर पेपरबैक्स, 2012.

प्रसाद,जयशंकर.कामायनी.प्रथम.वाराणसी:विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2012.

वर्मा,धीरेंद्र,संपा(प्रधान). हिन्दी साहित्य कोश. भाग 1. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड, 2013.

वर्मा,धीरेंद्र,संपा(प्रधान). हिन्दी साहित्य कोश. भाग 2. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड, 2013.

शर्मा,शिवकुमार.हिन्दी साहित्य:युग और प्रवृत्तियाँ.नई दिल्ली:अशोक प्रकाशन.

सिंह,विजयपाल.छायावाद के प्रतिनिधि कवि.दसवाँ.वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2013.

सिंह,विजयपाल.रीतिकाव्य-संग्रह.दसवाँ.इलाहाबाद: लोकभरती प्रकाशन, 2013.

सुल्ताना,किश्वर.पंत काव्य में कला शिल्प और सौन्दर्य.प्रथम.इलाहाबाद:राजीव प्रकाशन,1985.

हरदयाल और नगेंद्र.हिन्दी साहित्य का इतिहास.नई दिल्ली:नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2012.

संपर्क-सूत्र:
सहयोगी अध्यापिका एवं विभागाध्यक्षा
हिन्दी विभाग,गौहाटी विश्वविद्यालय
मोबाइल संख्या:9435116133
E-mail: rita1@gauhati.ac.in